REVA UNIVERSITY
Bengaluru, India

प्रमाण-पत्र

कला,मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग
हिंदी विभाग
तथा
अखिल भारतीय हिंदी महासभा,बैंगलूरू
के सयुंक्त तत्वावधान में आयोजित
दो दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

प्रमाणित किया जाता हे कि

प्रा./ डॉ नयन भादुले / राजमाने जी. के. जोशी (रात्र) वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर

ने दिनांक - 15-16 दिसम्बर, 2022 को कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित **" महिला सशक्तिकरण में हिंदी साहित्य का योगदान"(कहानी, उपन्यास, कविता और गद्य साहित्य के संदर्भ में)** इस विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी में विशेष अतिथि / सत्राध्यक्ष/शोधालेख प्रस्तोता / प्रतिभागी के रुप में उपस्थित रहकर सक्रिय सहयोग प्रदान किया । **डॉ शरद सिंह के पिछले पन्ने की औरत में स्त्री विर्मश**

.....इस विषय पर अपना शोधालेख प्रस्तुत किया।

कुलपति
रेवा विश्वविद्यालय, बेंगलुरु

Rukmini Educational

महिला सशक्तिकरण में
हिन्दी साहित्य का योगदान

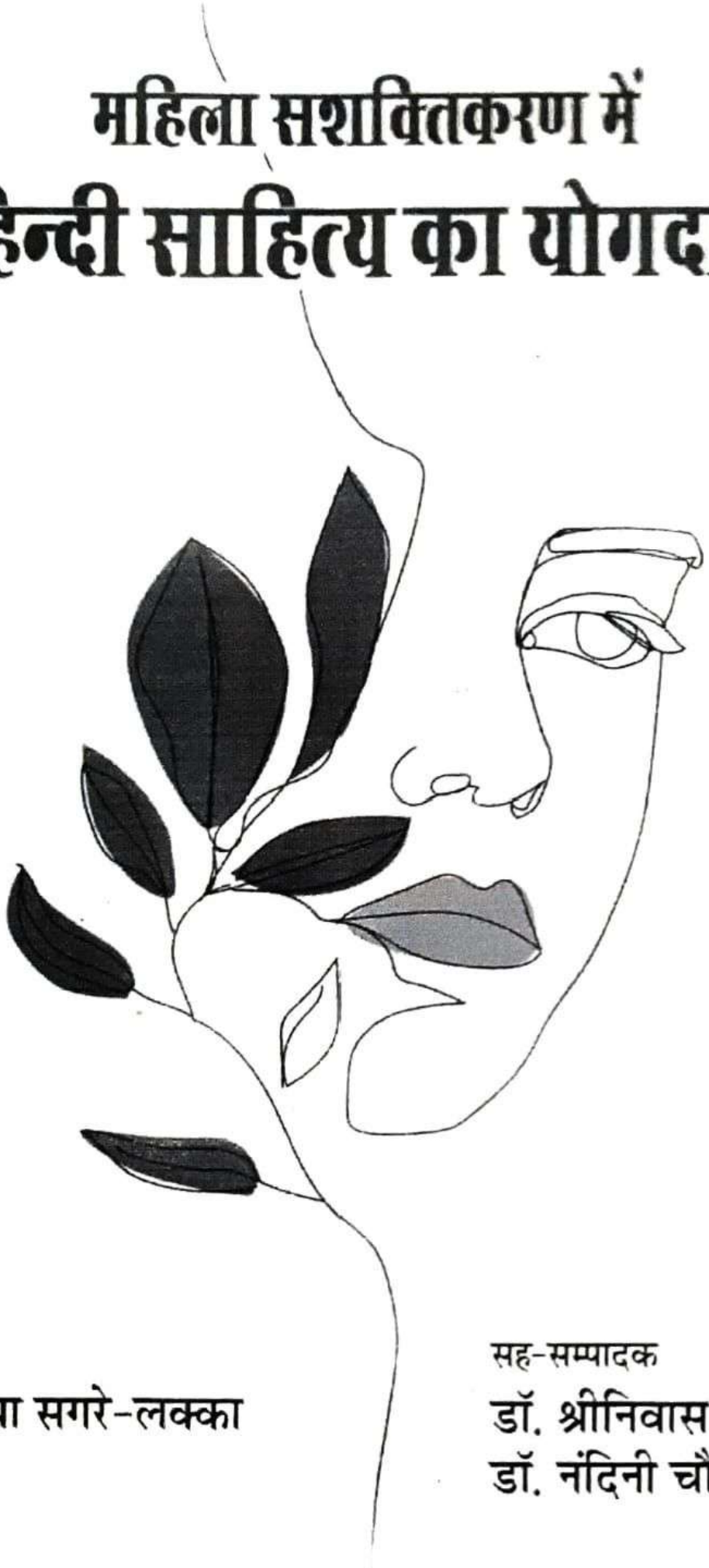

सम्पादक
डॉ. माया सगरे-लक्का

सह-सम्पादक
डॉ. श्रीनिवास मूर्ति
डॉ. नंदिनी चौबे

12. हिंदी महिला साहित्यकारों का हिन्दी साहित्य में योगदान 86-91
स्मिता चतुर्वेदी
13. हिन्दी महिला साहित्यकारों का हिन्दी साहित्य में योगदान 92-97
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन
14. नारी सबलीकरण को महिला कथाकारों का योगदान 98-103
डॉ. अनुपमा पी.ए.
15. 'साहित्यिकी' पत्रिका : महिला सशक्तिकरण 104-111
के विशेष परिपेक्ष्य में
लिली साह
16. प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में महिलाओं की भूमिका 112-115
डॉ. माया सगरे- लक्का
17. सशक्तिकरण के राजनीतिक परिदृश्य में स्त्री 116-123
डॉ. अजय कुमार साव
18. श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरुष का संबंध 124-129
डॉ. जी. वसंती
19. 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में चित्रित नारी समस्या 130-133
प्रा. सिद्धाराम पाटील
20. आधुनिक हिन्दी उपन्यास में चित्रित स्त्री 134-138
संघर्ष में पुरुष की भूमिका
सुस्मिता सेन
21. उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'शेष यात्रा' में चित्रित नारी 139-143
डॉ. क्षितिजा
22. 'आपका बंटी' उपन्यास में स्थित नारी संघर्ष 144-148
डॉ. अश्विनी सचिन सदावर्ते
23. मैत्रेयी पुष्पा के चुनिंदा उपन्यासों में नारी 149-153
शोषण एवं नारी सशक्तिकरण
अलका यादव
24. डॉ. शरद सिंह के पिछले पन्ने की औरतें में स्त्री विमर्श 154-158
प्रा. नयन भादुले-राजमाने

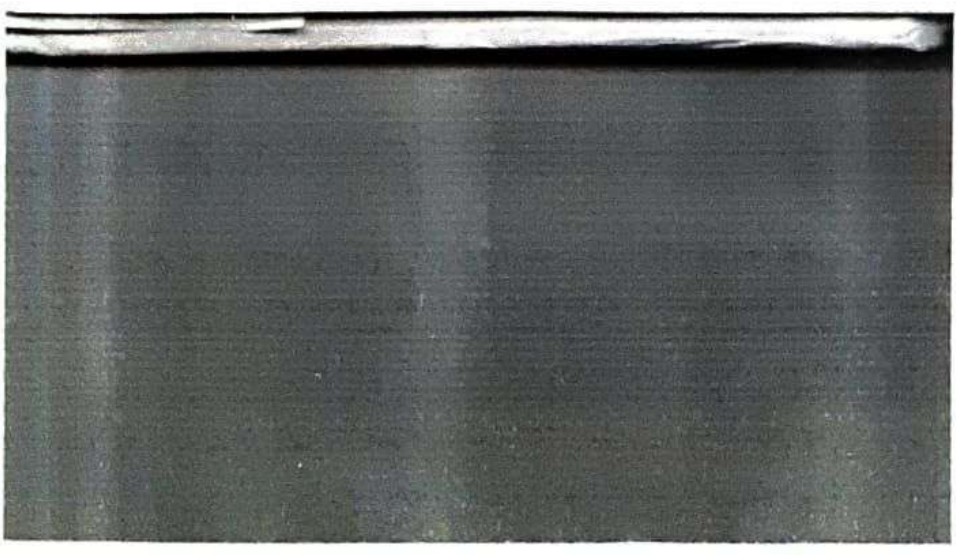

24

डॉ. शरद सिंह के पिछले 'पन्ने की औरतें' में स्त्री विमर्श

प्रा. नयन भादुले-राजमाने

विमर्श का अर्थ है 'जीवंत बहस' किसी भी समस्या या स्थिति को एक कोण से न देखकर भिन्न मानसिकताओं, दृष्टियों, संस्कारों और वैचारिक प्रतिबद्धताओं का समाहार करते हुए उलट-पुलटकर देखना, उसे समग्रता में समझने की कोशिश करना और फिर मानवीय संदर्भों में निष्कर्ष प्राप्ति की चेष्टा करना विमर्श है स्त्री पुरुष समानता स्त्री विमर्श का मुख्य मुद्दा है। मृणाल पांडे के अनुसार "स्त्री की तमाम इन बनी बनाई रूढ़िबद्ध छवियों को नकारकर स्त्रियों द्वारा अपनी अस्मिता की सही खोज, शिक्षा और उसके द्वारा आयी जीविकोपार्जन की क्षमता से संभव है।"[1] उससे यह स्पष्ट होता है कि स्त्री अपनी अस्मिता केवल शिक्षित होकर कायम नहीं रख सकती, तो उसे आत्मनिर्भर भी बनना पड़ेगा।

आज स्त्री विमर्श ने पितृसत्ताक मूल्यों, दोहरे नैतिक मानदण्डों, लिंगभेद की राजनीति व सामाजिक संरचना के अन्तर्विरोधों पर उँगली रखी है। बर्बर स्त्री विरोधी व्यवस्था ने सदियों तक स्त्री को कदम-कदम पर रौंदा है। उसके व्यक्तित्व को नकारते हुए उसकी गरिमा का हनन किया है। तो इस नैतिक आचरण की पैत्रिक मर्यादाओं और खोखली लक्ष्मण रेखाओं को स्त्री विमर्श अस्वीकार करता है।

प्रभा खेतान का कहना है "स्त्री लेखन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य स्त्री की विभिन्न भूमिका के बारे में मानव समाज को परिचय देना है। उन अँधेरे कोनों पर भी प्रकाश डालना है, जिसकी पीड़ा स्त्री ने सदियों झेली है। जरूरत है कि स्त्री अपनी मानवीय गरिमा और अधिकार को समझकर संरचनात्मक, सांस्कृतिक तथा मानवीय दृष्टिकोण के मूल तत्वों का विश्लेषण करें। अपने लेखन में उन तमाम स्त्रियों को शांति दे जो सक्षम है तथा जो स्त्री समाज के विकास में सक्रिय है। वे जो समाज की नजरों से दूर रही

किसी कोने में सुबक रही है, जिनके पास मानवीय गरिमा के नाम पर अपना शरीर है उनको भी शब्द प्रदान करें और साहित्य के विकास में नये दृष्टिकोण तथा वैकल्पिक अवधारणाओं को विकसित करें।"[2]

भारतीय स्त्री-विमर्श अपने में पश्चिम के स्त्री-विमर्श जितना न तो आक्रामक है और न ही वह पुरुष को अपना एक मात्र शत्रु समझता है। वह स्त्री के व्यक्तित्व जितना ही पुरुष के व्यक्तित्व को महत्वपूर्ण मानता है। स्त्री की प्रगतिशील मानसिकता के लिए एक सबसे बड़ी समस्या वे स्त्रियाँ हैं जो अभी तक प्रगतिशीलता की अवधारणा से परिचित नहीं है या पुरुष मानसिकता से ग्रस्त है। व्यवहारिक स्तर पर प्रश्न यही है कि नारी को उसकी प्रगतिशीलता से परिचित करवाकर उन्हें अपने हक और अधिकारों के प्रति कैसे जागरूक बनाया जाय और उनकी मुक्ति की दिशा में उनकी शक्ति का कैसे सकारात्मक उपयोग किया जाए. इसी दिशा की ओर कदम बढ़ाते हुई डॉ. शरद सिंह ने अपनी कलम को इस दिशा की ओर मोड़ दिया ताकि स्त्री मानसिकता की तह तक जाकर उसे सशक्त बनाए। उनकी जीवन शैली, उन्नत सोच और आर्थिक स्वतंत्रता के कारण वह सक्षम बन पड़ें इसलिए सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी वह कार्यरत है। जनपद ग्रामीण स्त्री को सशक्त चित्रण के साथ-साथ शिक्षित होने के कारण आत्मिक-बौद्धिक और आर्थिक सक्षम स्त्रियों का चित्रण भी वह बड़ी सूक्ष्मता के साथ करती है।

डॉ. शरद सिंह एक ऐसी साहित्यकार हैं जो अनछुए विषयों को लेकर लेखन करती है। जिससे पाठक उनके साहित्य के प्रति आकृष्ट हो जाता है। उनके लेखन के केंद्र में 'स्त्री' है। स्त्री तथा उसकी समस्याएँ, उसका सम्मान, उसकी अस्मिता के साथ वह स्त्री पात्रों को चित्रित करती हैं। स्त्रीवादी चेतना का वहन वह अपने साहित्य के द्वारा करती है। उनके साहित्य में स्त्री की समस्या, संघर्ष और समस्याओं को नियति मानकर उसे स्वीकार करने वाली स्त्री के साथ-साथ समस्याओं से मुक्ति के प्रयास तथा सफलता प्राप्त करने वाली स्त्रियों के विषयों पर शरद सिंह लेखनी चलाती है। समस्या के मूल में जाकर कुछ नया सोचती है तथा नई-नई राहें खोलती है।

डॉ. शरद सिंह हिंदी-साहित्य में एक सशक्त स्त्री-विमर्शकार के रूप में उभर कर सामने आयी हैं। इनके साहित्य कि एक विशेषता यह भी है की इनका साहित्य कल्पना पर आधारित न होकर यथार्थवाद से जुड़ा होता है। मानवीय संवेदनाओं और जीवन अनुभवों पर भी इनका साहित्य आधारित है। सुन्दरम शाण्डिल्य शरद सिंह के संबंध में लिखते है कि, "शरद सिंह साहित्य के क्षेत्र में एक सशक्त हस्ताक्षर ही नहीं, बल्कि वर्तमान समय की लड़कियाँ स्त्रियों की रोल मॉडल भी है।"[3]

डॉ. शरद सिंह उनके बेस्ट सेलर उपन्यास 'पिछले पन्ने की औरतें' जो हिंदी साहित्य का टर्निंग प्वाइंट माना गया है। इसमें हाशिए में जी रही उन महिलाओं के जीवन

की गाथा, उनकी सभी विडंबनाओं के साथ सामने रखती है। इस उपन्यास का शरद सिंह रिपोर्ताज शैली में प्रस्तुत किया है, जो रिपोर्ट की तरह न होते हुए कथात्मक वृत्तांत बन पड़ा है। इस उपन्यास की कथावस्तु जीवन से सम्बन्धित समस्या पर केंद्रित चुनी है इस कारण यह कथानक स्वाभाविक एवं यथार्थ प्रतीत होता है। यह उपन्यास अतीत और वर्तमान की कड़ियों को बड़ी ही कलात्मकता से जोड़ते हुए उसे पढ़ने वाले को वहां पहुंचा देता है जहां बेड़नियों के रूप में औरतें आज भी अपने पैरों में घुंघरू बाँधने के लिए और अपनी देह का सौदा करने के लिए विवश है।

शरद सिंह ने इस उपन्यास में जिन औरतों को पात्र के रूप में सामने रखा है वे सदियों से सामाजिक उपेक्षा, आर्थिक विपन्नता और दैहिक शोषण को अपनी नियति मानकर सहती आ रही है। इस शोधपरक उपन्यास में सामाजिक स्तरों में दबी, कुचली और पिछले पन्नों में छिपी हुई औरतों को उन्होंने पहले पन्ने पर स्थान दिया है। तीन भागों और सत्ताइस उपभागों में लिखे गए उपन्यास के स्त्री पात्र महत्वपूर्ण है। किसी स्त्री की वेदना को, पीड़ा को रिपोर्ताज शैली में पिरोना शरद सिंह की एक अलग विशेषता है। उपन्यास में लेखिका समाज की आन्तरिक और बाह्य परतों को खोलने का प्रयास करती है और उसमें सफल भी होती है। समाज के इस कुरूप चेहरे को बड़े बेबाकी से प्रस्तुत करती है।

'पिछले पन्ने की औरतें' एक उपन्यास के साथ-साथ यथार्थ का औपन्यासिक दस्तावेज भी है। इसमें बेड़िया समाज का इतिहास है, बेड़नियों के त्रासद जीवन का विस्तृत वर्णन है, बेड़नियों के संघर्ष का बड़ी सटीकता से वर्णन है। शरद सिंह जहां एक ओर नए विषयों को कथानकों को अपने उपन्यासों एवं कहानियों का विषय बनाती है, वहीं उनके कथा साहित्य में धारदार स्त्री विमर्श भी दिखाई देता है। इस उपन्यास के बारे में परमानन्द श्रीवास्तव लिखते है, "शरद सिंह का बीहड़ क्षेत्रों में प्रवेश ही इतना महत्वपूर्ण है कि एक बार ही नहीं, कई-कई बार इस कृति का पढ़ना जरूरी जान पड़ेगा। 'पिछले पन्ने की औरतें' उपन्यास लिखित से अधिक वाचिक इतिहास पर आधारित है। इस बेलगाम कथा को श्लील-अश्लील का आरोप संभव नहीं है। अश्लील दिखता हुआ ज्यादा नैतिक दिख सकता है। भद्रलोक की कुरूपताएँ छिपी नहीं रह गई हैं।"[1]

इस उपन्यास में अनेकों स्त्री पात्र हैं, जिसमें शामा, गोदाई की नचनारी, बालाबाई जो एक गर्भवती बेड़नी को भी देह-पिपासु पुरुषों ने केवल और केवल स्त्री देह के रूप में देखा। चंदाबाई, फुलबा, रसूबाई ये बेड़नियाँ स्त्री को मात्र देह मानने वाले के द्वारा स्त्री के सम्मान और स्वाभिमान पर चोट पहुँचाने, अत्याचार करने वालों को झेलती है। समाज इन्हें अपनी खुशियों को बढ़ाने के लिए पारिवारिक उत्सवों में नाचने के लिए बुलाता तो है लेकिन अपने परिवार में शामिल करने से हिचकता है। इस उपन्यास में

चंदाबेन बेड़िया समाज के लिए अपना जीवन समर्पित करते हुए 'बेड़नी पथरिया' गाँव में 'सत्य शोधक आश्रम' की स्थापना कर बेड़िया समाज की महिलाओं का जीवन बदलना चाहती है।

ठाकुर से ठाकुराइन बनने की चाह रखने वाली नचनारी जब बात करती है तो वह कहता है, "हम और हमारा ये तो तुम्हें ही ठकुराईन मानते हैं..."[1] ठाकुर ने यह बात अपनी दोनों जाँघों के मध्य की ओर संकेत करते हुए कहा था। वह इतना गिरा हुआ इन्सान है कि उसे औरत ना मिले तो वह पशुधन के साथ भी अपना अमृत बाँट देता है।

फुलवा और डेलन का विवाह तो हो जाता है, लेकिन शुरुआत के दिन अच्छे गुजरे लेकिन आगे जाकर वह भी बेड़िया पुरुषों जैसा आलसी होता चला गया और गृहस्थी फुलवा के कंधों पर आ गई। फुलवा किसी अन्य पुरुष के साथ रहती है तो उसके अंदर का पुरुष जाग उठता और वह उसे मारपीट, गाली-गलोच पर आ जाता। तो फुलवा भी दहाड़ मारकर कहती, "चरित्तर का इतना ही खयाल था तो ब्याहकर ले चलते अपने गाँव. ..वहाँ जैसे रहने को कहते, वैसे रहती। यहाँ तो पेट पालने के लिए दूसरों का बिस्तर गर्म करना ही पड़ता है...बेड़नी के मरद बने हो तो बेड़िया जैसे रहो, ठकुरावसी न दिखाओ।"[2]

बेड़नियों के साथ-साथ लेखिका चंपा जैसे सामाजिक कार्यकर्ता का भी चित्रण करती है। चंपा विनोबा भावे, के 'स्वराज' कार्यक्रमों में तथा सुंदरलाल बहुगुणा के 'चिपको आंदोलन' जैसे कार्यक्रमों में भाग ले रही तो घर से बाहर अकेली थी तो उसके माँ के मन में अनेकों सवाल उठे। यह सवाल जब वह चंपा से पूछती है तो वह कहती है, "माँ... पहली बात तो यह कि मेरा शील सुरक्षित है और दूसरी बात ये कि अगर मेरा शील भंग हो जाएगा तो उससे कौन-सा पहाड़ टूट पड़ेगा?"[3] आगे जाकर वह यह भी कहती है, "जब तक औरत स्वयं कमजोर न बने तब तक कोई पुरुष उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

श्यामा अपनी बेटी गुड्डी को इस दलदल से बचाना चाहती है और वह उसकी शादी कर देती है। कुछ दिन अच्छे बीतते हैं लेकिन आगे जाकर उसे बेड़नी की बेटी होने से लेकर भद्दी-भद्दी गालियाँ दी जाती हैं तथा मार-पीट भी होती है, इतना ही नहीं तो उसका पति खिलान उसे 'ब्लू फिल्म' दिखाकर धंधा करवाना चाहता है। वह कहता है, "तू क्यों समझती है कि तुझे अपनी बीवी बनाए रखने को तुझसे शादी किया है मैंने अरे, चल हट! तुझे तो मैं इसलिए ब्याहकर लाया हूँ कि तुझसे धंधा करा सकूँ। इसलिए तो मैं तेरे को रोज फिल्में दिखाता हूँ कि तू ग्राहकों को खुश करने के नए-नए झटके-झटके सीख ले... मगर तू तो लगता है कि मेरे हाथों अपना गला दबवाए बिना

नहीं मानेगी।''[8] इससे भी गुड्डी बाहर निकला चाहती है, प्रयास भी करती है। गुड्डी के निश्चय को देखकर लगता है नचनारी, रसूबाई, चंदा, फुलवा और श्यामा जैसी औरतों ने जिस आशा की लौ को अपने मन में संजोया था वह अभी बुझी नहीं है। गुड्डी के रूप में अपने बेड़िया समुदाय की औरतों को शोषण के पिछले पन्ने से निकालकर विकास की मुख्यधारा के अगले पन्ने पर ले आए...

अंततः हम यह कह सकते हैं कि विवेच्य उपन्यास में स्त्री-शोषण के कारण उत्पन्न असंतोष और आक्रोश भी है। सामाजिक रूढ़ियों, बंधनों एवं देह के स्तर पर स्त्री मुक्ति की कामना भी है। साथ-ही-साथ स्त्री सशक्तिकरण भी है। आत्मविश्वास के साथ दृढ़ संकल्प कर पीड़ित जिंदगी से बाहर निकलने के लिए छटपटाहट है, प्रयास भी है। समाज के दोहरेपन को चुनौती देती गुड्डी, श्यामा तथा अन्य पात्रों को रेखांकित कर यह उपन्यास स्त्री विमर्श की कई परतों को खोलता ही नहीं तो उघाड़ने का काम करता है।

संदर्भ-

1. मृणाल पांडे, स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, पृ. सं. 17
2. प्रभा खेतान, प्रथम दशक के महिला लेखन में स्त्री-विमर्श, सम्पादक- डॉ. मृदुला वर्मा, [illegible] प्रकाशन, पृ. 21
3. अस्थाना सर्वेश, सम्पादक शाण्डिल्य सुन्दरम, (युवा साहित्यकार शरद सिंह के साथ साक्षात्कार) संस्कार पत्रिका, 25 अगस्त 2014, पृ. 61
4. परमानंद श्रीवास्तव, साहित्य सृजन, नवम्बर- दिसम्बर, 2009
5. पिछले पन्ने की औरतें, डॉ. शरद सिंह, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. 28
6. वही, पृ. 61
7. वही, पृ. 131
8. वही, पृ. 299

★

रेवा विश्वविद्यालय, बेंगलुरु

डॉ. माया सगरे-लक्का

डॉ. माया सगरे-लक्का का जन्म 30 सितंबर को महाराष्ट्र राज्य के लातूर जिले में एक धार्मिक तथा सुशिक्षित परिवार में हुआ। आपकी शिक्षा श्री देशीकेन्द्र विद्यालय लातूर में तथा स्नातकोत्तर की उपाधि दयानंद कला महाविद्यालय लातूर से प्राप्त हुई। आपने स्वामी रामानंद तीर्थ विश्वविद्यालय से बी.एड. किया और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद से पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आपकी 'प्रयोजनमूलक हिंदी' अरुणा प्रकाशन, लातूर से तथा 'हिंदी और मराठी के स्वातंत्र्योत्तर आँचलिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन' शैलजा प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित हुई है। साथ ही 'प्रयोजनमूलक हिंदी' नामक किताब अखंड प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुई है। 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया भाषा, लेखन कला तथा तकनीकी प्रविधि' यह संपादित किताब विकास प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित हुई है। आपने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में अनेक प्रपत्र प्रस्तुत किए हैं। जिनका प्रकाशन भी हुआ है। उनमें से कुछ प्रपत्रों को सर्वश्रेष्ठ प्रपत्र के रूप में सम्मानित भी किया गया है। आपके अलग-अलग महाविद्यालयों में अतिथि व्याख्यान भी हुए हैं । इसके साथ ही आप अखिल भारतीय हिंदी महासभा के बेंगलुरु प्रांत के 'प्रांत अध्यक्ष' के रूप में कार्यरत हैं। संत कबीर प्रतिष्ठान लातूर तथा ज्ञान किरण संस्था बेंगलुरु इन संस्थाओं में सदस्य के रूप में कार्यरत हैं। आप पिछले 18 सालों से बेंगलुरु में निवास कर रही हैं। आप रेवा विश्वविद्यालय के कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग में सह आचार्य के रूप में कार्यरत हैं। आपको मराठी, हिंदी, अंग्रेजी तथा कन्नड़ भाषाओं का ज्ञान है।

Also available at : Flipkart amazon

विकास प्रकाशन, कानपुर
311 सी, विश्वबैंक बर्रा, कानपुर-208027
शोरूम : 110/138 मिश्रा पैलेस, जवाहर नगर, कानपुर-12
मोबाइल : 9415154156, 9450057852
E-mail : vikasprakashankanpur@gmail.com
vikasprakashanknp@gmail.com
Website : www.vikasprakashan.com

ISBN 978-93-95922-18-0

₹ 800.00